Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

उदयभानु हंस जी की गजलों में प्रेम भावना

Sumit*

M.A. in Hindi (UGC Net)

शोध-आलेख सार – *उदयभानु हंस जी की गजलों में प्रेम संबंधी संवेदना स्वाभाविक है। किसी भी वस्तु के प्रति आकर्षित होना मानव मन की सहज प्रक्रिय है, जो प्रेम में बदल जाती है। प्रत्येक कवि इसे अपने काव्य में उतारता है। उदयभानु हंस जी ने भी इसे अपने काव्य में उकेरा है। वैसे तो समकालीन कवियों ने मनुष्य के बेबसी, निराशा, कुण्ठा, और भय आदि को वर्णित किया है लेकिन काव्य में पाठक की रूचि को बढ़ाने के लिए प्रेम को अपने काव्य में समाहित किया है। कविता की जादुई शक्ति से कवि अपनी कविताओं में एक मासूम सा सुंदर और सम्मोहक संसार रचते हैं। जिसमें प्रेमनिष्ठ संवेदना को स्थान मिला है। उन्होंने जीवन को अपने आप में सुंदर बताया है।*

मुख्य शब्दः सहज, सामाजिक, संबंध, प्रेमिका, जादुई शक्ति।

----------X----------

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार और समाज एक सूत्र में बांधे रखने का मूल भाव प्रेम ही है। कहा भी है कि 'है प्रेम जगत का सार और कुछ सार नहीं।' मानव के आपसी संबंधों को बनाने में प्रेम ही एक ऐसी धारा है। प्रेम स्वाभाकि है किसी भी वस्तु के प्रति आकर्षित होना मानव की सहज प्रक्रिया है। जो प्रेम में बदल जाती है। प्रत्येक कवि इसे अपने काव्य में उतारता है। उदयभानु हंस जी ने भी इसे अपने काव्य में उकेरा है। वैसे तो समकालीन कवियों ने मनुष्य के बेबसी, निराशा, कुण्ठा, और भय आदि को वर्णित किया है लेकिन काव्य में पाठक की रूचि को बढ़ाने के लिए प्रेम को अपने काव्य में समाहित किया है। कविता की जादुई शक्ति से कवि अपनी कविताओं में एक मासूम सा सुंदर और सम्मोहक संसार रचते हैं। जिसमें प्रेमनिष्ठ संवेदना को स्थान मिला है। उन्होंने जीवन को अपने आप में सुंदर बताया है।

"आज दिल के तारों पर कोई गजल छेड़ो

वो भी पास बैठे हैं रात भी सुहानी है

क्यों न चोट खाकर भी दिन उन्हें दुआएं दे

मैं तो आज शायर हूँ उन की मेहरबानी है

मैंने आंसुओं से जिसे अपने दिल पे लिक्खा है

वो गजल जमाने को उम्र भर सुनानी है।'1

कवि ने सुंदर एवंप्रिय जीवन की कल्पना की है। यह जीवन प्यार की तरह ही सुंदर रूप धारण किए हुए है। इस संसार को बदसूरत बनाने वाली ताकतों से हमेशा लड़ती रही है। कवि पे्रम की दुनिया में दाम्पत्य प्रेम के विरले कवि हैं।

प्रस्तुत गजलों में कवि ने अपने दाम्पत्य प्रेम का चित्रण तो किया ही है साथ में यह भी दिखाने का प्रयत्न किया है कि औरत ही वास्तव में घर को घर बनाती है वही पुरुष को संभालती है वही बच्चों की देखभाल करने के साथ-सथ बगैर थके पत्नी रूप में पति से प्रेम करके उसे सम्पूर्ण करती है। सबसे ज्यादा तो कवि औरत के उस रूप को आरेखित करते दिखायी देते जिसके अभाव में कवि को घर घर न लगकर मात्र मकान लगता है अर्थात् मकान पत्नी से ही घर के रूप में पहचान पाती है। तभी तो कवि को अपने घर और पत्नी की इतनी याद सताती रहती है कि मिलन न हो पाने के कारण व्याकुल हो जाता है।

"आँख उठती तो है, आँख मिलती नहीं,

होंठ खुलते तो हैं बात होती नहीं।

चाहता है बहुत ही दिन जिन्हें

उनसे अक्सर मुलाकात होती नहीं।।

www.ignited.in

दाँव दिल का लगा दो यही सोचकर

प्यार के खेल में मात होती नहीं।"2

कवि ने प्रेम संबंधी संवेदना को प्रेमिका तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि माता-पिता, भाई-बहन, परिवार समाज भी इसमें समाहित हैं। इस तरह कवि ने एक प्रकार से संपूर्ण मानवता के प्रति प्रेम को व्यक्त करते हुए विश्व-प्रेम की परिकल्पना को ही साकार किया है। लेकिन कवि जब अपने आस-पास के वातावरण को प्रेमरहित पाता है तो पीड़ा का अनुभव करते हुए लिखता है -

"आज दुनिया से है भीख क्यों मांगता

देश भारत में किसी चीज की है कमी

सत्य के सामने झूठ रहता नहीं

है अंधेरा कहां है जहां रोशनी

राम का कृष्ण का नाम अब कौन ले

देश में छा रही सभ्यता पश्चिमी

कब से है उठ चुकी अर्थी संगीत की

रह गई शेष फिल्मी अंत्याक्षरी।'3

अर्थात् कवि दर्शाता है कि आज हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता का जोर होता जा रहा है और अपनी देशी वस्तुओं, सभ्यताओं, संस्कृतियों से मनुष्य विमुख हो रहा है जो बड़ी ही दयनीय है कवि इन सब कारणों से बहुत चिंति है। अतः कवि वर्तमान भौतिकता से भी आहत दिखाई देते हैं। लेकिन फिर भी कवि आस्था का दामन छोड़ते और प्रेेम को ही जीवन का आधार मानते हैं। इसलिए अपनी प्रेमिका की हंसी में अपनी खुशी तलाश रहे हैं और अपनी गजल में कवि अपनी प्रेमिका के प्रति अपने प्यार को दर्शाते हैं -

"मेरे चमन को जलाने वाले तुझे में अपनी बहार दूंगा

भले ही तू दर्द दे जन्मभर मैं मरते-मरते भी प्यार दूंगा

समीप रहकर बिता जो क्षण उसी मधुर याद के सहारे

कुछेक घड़ियों की बात क्या है मैं उम्र सारी गुजार दूंगा

उठाए तूफान लाख सागर, हृदय में चिंता न करना

मैं डूब जाऊं भले भँवर में तुम्हें तो तट पर उतार दूँगा।"4

कवि ने कविता में युवा उम्र के प्यार को काफी बढ़ावा दिया है, प्रेम की भूख तेज हो रही हैं तो दूसरे में अजीत तरह से नाटकीय मोड़ पाठक के मन में बेचैनी सी पैदा कर रही है। स्वप्न में ही सारा कार्य किया जा रहा है। समाज में इस प्रकार के बनावटी प्यार को देखा जा सकता है। तो दूसरी तरफ कवि प्रेमिका के बिना सब कुछ व्यर्थ समझता है। यथा -

"बसंत का अंत करने वाली कठोर पतझड़ से जा के कह दो,

बिखेर देगी वो जितने कांटे मैं आहे भर-भर बुहार दूंगा

कभी जो माथे की देख बिंदिया तुझे मेरी याद भी आए

लजा के दर्पण को चूम लेना, तुझे दुआएं हजार दूंगा।"5

यही कवि की उदात प्रेम भावनाएं ही प्रकट नहीं होती, बल्कि इससे भी ज्यादा है। यह प्रेम ऐसा है जो हमारे साथ-साथ चल रहा है। यह कुछ ऐसा है जो बिछड़ने पर भी हमारे साथ रहता है। तो दूसरी तरफ प्रेम की हड़बड़ी और उतावलेपन को भी कवि एक साथ व्यक्त कर रहे हैं। आपस में मिलने के दिन काफी दूर हैं, लेकिन मनुष्य तेजी से उतावला हो रहा है। कवि इस प्रेम के अनेकों, उदाहरण अपनी गजलों में देता है। वह प्रिय की याद आने वाले दिनों को अपनी गजल में दर्शाता है -

"चांदी की रात लेकिन वो न आए

व्यर्थ मैंने बैठ कर आंसू बहाए

लग रहा था यों मुझे ऐसी दशा में

नाव ज्यों तट पर पहुंच कर डूब जाए

या कभी कोमल भुजाओं में पवन के

झूलने का यत्न करती टूट जाए।

प्यास थी और प्यासा सामने था

होंठ से छूते हुए हम हिचकिचाए।'6

प्रेम का यह लम्हा मामूली होने के साथ-साथ जरूरी और समकालीन है। इस प्रकार गजलें बनावटी के इस दौर में सहजता को बनाए रखती है। प्रेम जीवन की वह धारा है जिसमें व्यक्ति को बेवजह भी याद आती रहती है।

इस तरह कवि ने अपने अनेक गजलों में प्रेम को जीवन की अहम कड़ी मानते हुए प्रेम का वर्णन किया और वो प्रेम को सर्वोपरि मानते हैं।

मनुष्य के जीवन में प्रेम अहम होता है और वे अपनी गजलों में दर्शाते हैं -

"जिंदगी प्रेम के सिवा क्या है?

है नहीं चांद तो निशा क्या है

रूप के देखने को आँख मिली,

देख लेने में फिर बुरा क्या है?

चाँदनी में सुलग रहा है दिल

राम जाने मुझे हुआ क्या है।

प्यार जीवन के अंत तक रहता है

जो उतर जाए वो नशा क्या है।"7

अर्थात् कवि प्यार को नशा मानते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि हंस जी की गजलों में प्रेमनिष्ठ संवेदना का भी समावेश हुआ है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. रामसजन पांडेय, उदयभानु हंस रचनावली, भाग-2, पृ. 479
2. वही, पृ. 485
3. वही, पृ. 495
4. वही, पृ. 513
5. वही, पृ. 513
6. वही, पृ. 512
7. वही, पृ. 51

Corresponding Author

Sumit*

M.A. in Hindi (UGC Net)

mrs.sumit88@gmail.com